

महावाणी - विश्वकल्याण की वाणी

२४/०९/२०२६

ॐ परमात्मने नमः

परमात्मा गुरुजी को नमस्ते। परमात्मा गुरुजी को यह सेवा समर्पण है।

सभी आत्माएं अपनी मूलस्वरूप अवस्था में स्थित हो जाएं... सभी अपना मूलस्वरूप देखें... देखिये अपना मूलस्वरूप... अपने मूलस्वरूप का अनुभव कीजिए... अपने मूलस्वरूप को स्पष्टता से देखने की कोशिश करें... कुछ सेकेंड के लिए अपने मूलस्वरूप को देखते जाएं... चमकता हुआ सितारा... जिससे लाइट और माइट निकल रही है... अनुभव करें अपनी मूलस्वरूप स्थिति का...

जितना जितना आप आपके मूलस्वरूप का अनुभव करते जाएंगे, उतना उतना आपको उसकी गहराई पता चलती जाएगी। हर कोई चेक करे सारे दिन भर में आप आत्मा कितना समय आप आपके मूलस्वरूप स्थिति को देखने के लिए उसका अभ्यास करने के लिए देते हैं। हर कोई चेक करे आज के दिन में मुझ आत्मा ने अपने कल्याण अर्थ क्या तपस्या की। सभी आत्माएं पूरे दिन भर में, शरीर के निर्वाह अर्थ, संपूर्ण दिन व्यस्त रहते हैं, फिर उसमें शरीर की व्यवस्था हो, शरीर का खान-पान हो, शरीर को ठीक-ठाक रखना हो, शरीर का विश्राम हो, या शरीर को चलाने के लिए, बाहर जाके पूरे दिन कुछ नौकरी-धंधा करना हो, हर कोई चेक करे, सब कुछ जो भी पूरे दिन भर में आप करते हो, इसमें से आप आप आत्मा के कल्याण अर्थ कितना करते हो, और आप आपके शरीर निर्वाह अर्थ कितना करते हो।

इस संगम युग में आप आत्मा जो कुछ भी प्राप्ति करेंगे, जो कुछ भी पुण्य कर्म करेंगी, वही आपके अगले ड्रामा में, अगले कल्प के सभी जन्मों के लिए काम में आएंगे। पर आप आत्मा प्राप्ति कब कर सकती है? आप आत्मा से संगम युग में पुण्य कब जमा हो सकता है? आप आत्मा से सेवा कब हो सकती है इस संगम युग में? क्या किसी को यह स्पष्ट रूप से पता है? आपने बाहर किसी को वस्त्र दान दिए या अन्न दान दिया या किसी की किसी भी प्रकार से मदद की, क्या सच में यह सब करके आपने पुण्य

कमाया? पाप और पुण्य यह बहुत गहराई के विषय हैं, इनको समझना अति आवश्यक है। रास्ते चलते किसी ने आप से अन्न की मदद मांगी और आपने उसे किसी भी प्रकार का अन्न दान दिया, वह अन्न खाकर उसके शरीर में स्वस्थता आयी, मजबूती आयी और उसने अगर कोई विपरीत कर्म किया तो उस कर्म का बोझा आप ही के माथे पर आएगा। आप नहीं जानते कर्मों का हिसाब किताब अति गुह्य हैं इसलिए संगमयुग में परमात्मा की श्रीमत अनुसार कर्म करेंगे तो ही वह पुण्य के खाते में जमा होगा। आप आपके मन से अगर दान-पुण्य करना चाहते हो या करते हो किन्तु आपको पता ही नहीं है आप जो जिसके लिए कर रहे हो या करना चाहते हो वह करने के बाद उसका परिणाम क्या होगा, इसलिए पुण्य माना जो परमात्मा की श्रीमत अनुसार किया हुआ कर्म है, परमात्मा की आज्ञा अनुसार किया हुआ कर्म, उस ही को संगम युग में पुण्य कहा जाता है। आपके मन के अनुसार किए हुए कर्म पाप कर्म में ही गिने जाएंगे क्योंकि आप आत्मा आपकी स्थिति में कर्म ना करते हुए आप आपके बॉडी कॉन्ससियस स्टेट में रहकर आप कर्म करते हो। जो स्टेट आत्मा की है ही नहीं उस विपरीत स्टेट में रहकर आप से जो कुछ भी कर्म किया जाता है या हो जाता है वह सारा आपके पाप कर्मों के हिसाब में आता है। इसलिए संगम युग में जब आप आत्मा को आपकी सत्य पहचान मिल जाती है तो आप आत्मा का एक ही कर्म होता है सदा उस स्थिति में रहकर हर कर्म करने क्योंकि संगम युग में ही परमात्मा सभी को सभी आत्माओं को यही ज्ञान देते हैं समझ देते हैं कि आप कौन हो और आपको कौन सी स्थिति में सदा रहना है। संगम युग में आत्माओं को अपने मूलस्वरूप स्थिति में स्थित होकर सभी कर्म करने होते हैं। अगर आप आत्मा ने आपकी यह स्थिति छोड़कर मायावी संस्कारों वश कर्म किए तो हर कर्म का हिसाब-किताब आप आत्मा के खाते में आता जाएगा, क्योंकि आप आत्मा स्थिति में नहीं हो। आप स्थिति में ना होने के कारण आप ही के मायावी अस्तित्व ने कंट्रोल लेके आप से यह कर्म कराए। इसलिए संगम युग में आने के बाद प्राप्ति और घाटा इसका ज्ञान लेना बहुत आवश्यक है, इसलिए संगम पर हर किसी का एक ही काम होता है, किसी के किसी भी बातों में नहीं जाना और मुझ आत्मा को जो कर्तव्य है, सदा अपने मूलस्वरूप स्थिति में रहना, उस ही स्थिति में रहकर कर्म करना। जब-जब आत्मा अपने कल्याण के विषय को छोड़कर

किसी और के बारे में सोचती है तत्क्षण वह सोचने वाला अस्तित्व मायावी अस्तित्व होता है। आत्मा अपना कंट्रोल खो गई और मायावी अस्तित्व ने विचार चलाने शुरू किए। जब-जब आत्मा अपने कल्याण का विचार करती है तब आत्मा उपस्थित रहती है, जैसे ही किसी और का किसी भी प्रकार का विचार चलना शुरू हुआ समझ लेना मायावी अस्तित्व सोच चला रहा है। इसलिए संगम पर सबसे पहली धारणा है किसी के किन्हीं भी बातों में कभी भी नहीं जाना, यहां तक स्वप्न में भी नहीं जाना। हर कोई अपने से चेक करे कि क्या पूरे दिन भर में जो भी हम कर्म करते हैं क्या हम आत्मा ही करते हैं या हमारा मायावी अस्तित्व करता है? जो-जो कर्म आत्मा अपनी स्थिति में रहकर करती है, वह सारा कर्म पुण्य के खाते में जमा हो जाता है। क्योंकि यह परमात्मा की श्रीमत है कि सदा अपने मूलस्वरूप में रहकर कर्म करना। उसके विपरीत आप बॉडी कॉन्ससियसनेस में आकर किस ही भी प्रकार के कर्म करेंगे तो वह सारा आपका पाप कर्मों का खाता बनता जाएगा। मूलस्वरूप अवस्था में आत्मा सदा खुशी में रहती है, आनंद में रहती है, उमंग-उत्साह की अवस्था में रहती है, अगर इनमें से कोई भी अवस्था आपकी नहीं है, और फिर भी आप कोई कर्म करते जाते हो, तो वह कर्म करने वाला, मायावी अस्तित्व है। भल वह कर्म आपने कितना भी एक्क्यूरेट भी क्यों न किया हुआ हो पर वह आप आत्मा के द्वारा नहीं हुआ है। इसलिए उस कर्म से जो कुछ भी आगे परिणाम होगा वह सब कुछ आत्मा को ही भुगतना पड़ेगा। आत्मा को सदैव यह स्मृति रखनी होगी कि संगम युग में ही मुझे मेरे सारे कर्मेन्द्रियों द्वारा जो कुछ भी कर्म करना है वह सदा मूलस्वरूप स्थिति में करना है। क्योंकि पिछले सभी जन्मों में बॉडी कॉन्ससियसनेस में ही रहकर कर्म हुए हैं और इस ही संगम युग में आत्मा को अपनी मूलस्वरूप अवस्था का अभ्यास करते कर्मों में उसको प्रैक्टिस करते उस अवस्था को नेचुरल अवस्था बनानी होगी और वही नेचुरल अवस्था सतयुग में लेकर जाएगी। जहां पर सभी देवी-देवताएं नैचुरली उनका सारा व्यवहार आत्मिक स्थिति का ही होता है। इसलिए आत्मा को अभी ही इसी ही संगम युग में वह संस्कार धारण करने होंगे। संस्कार अपने से अपने आप नहीं बनेंगे, उनको यहां बनाना होगा।

आपको आपके सभी सूक्ष्म और स्थूल कर्मेन्द्रियों के ऊपर कंट्रोल करना आना चाहिए, जो कि आत्मा की स्वराज्य अधिकारी की स्टेज है। हर कोई अपने से सदा चेक करे, कि क्या मेरा यह कर्म, मैं आत्मा ही कर रही हूँ, क्या मैं मूलस्वरूप में रहकर यह कर रही हूँ, क्या अभी मैं किसी से बात कर रही हूँ तो क्या मैं आत्मा ही कर रही हूँ मेरी स्थिति में रहकर? जब सदा कोई हर कोई अपनी हर बात के लिए चेकिंग करते जाएंगे कि क्या यह मैं आत्मा ही कर रही हूँ ना तो सिर्फ इतनी ही चेकिंग से आप आपके अंदर परिवर्तन पाते जाएंगे। आप आपके मूलस्वरूप में अपने आप आते जाएंगे। एक होता है कर्म घटित होने के बाद रियलाइज़ होना कि यह मुझे ऐसा नहीं करना चाहिए था पर मेरे से ऐसे कैसे हो गया और दूसरा है कर्म करते आत्मा अगर अपनी स्थिति में रहे तो उससे सदा व्यवहार सुखकारक ही होगा। बाद में रियलाइज़ होके कुछ नहीं कर पाएंगे इसलिए हर कर्म करने से पहले कुछ सेकेंड का पॉज़ अवश्य लें वह पॉज़ इसलिए जरूरी है कि आप आत्मा, आप आत्मा को रिमाइंड करें कि यह कर्म मुझ आत्मा को ही करना है मेरी मूलस्वरूप लाइट की अवस्था में रह के। हर कर्म से पहले कुछ सेकेंड का पॉज़ अपने लिए अपनी स्मृति के लिए लेना जरूरी होगा और जब इसका नेचुरल अभ्यास होता जाएगा कर्मों में, संस्कारों में यह उतरता जाएगा उसके बाद आप आत्मा को यह पॉज़ लेने की जरूरत नहीं पड़ेगी। पर पहले सभी सूक्ष्म और स्थूल कर्मेन्द्रियों को आदत डालने के लिए उनका संस्कार पक्का करने के लिए हर कर्म से पहले कुछ सेकेंड का पॉज़ खुद की स्मृति के लिए लेना जरूरी होगा। क्योंकि संगम युग में आप जो करोगे फिर वो अच्छा हो या उसका विपरीत हो सारा आपको आप आत्मा को ही भुगतना होगा और संगम युग में अपनी सदा श्रेष्ठ मूलस्वरूप स्थिति में रहकर कर्म करेंगे तो आप आत्मा के पास प्राप्तियां ही प्राप्तियां सदा रहेंगी।

मूलस्वरूप की वह ताकत है क्योंकि मूलस्वरूप में किसी भी प्रकार का मायावी अस्तित्व कभी इमर्ज हो ही नहीं सकता, आप से कभी भी गलत कर्म हो ही नहीं सकते इसलिए संगम युग प्राप्तियों का युग है पर कब जब आत्मा अपनी स्थिति में रहकर कर्म करेगी।

आज के दिन में सभी आत्माएं चेक करना और रोज चेक करना सुबह उठने से लेकर जो-जो हम कर्म करते हैं उसमें आप आत्मा कौन से कर्म करती हैं और आपका मायावी अस्तित्व कौन से कर्म करते हैं? हर कोई अपनी चेकिंग जरूर करे। जब तक आप आपके हर कर्म को खुद ही वेरीफाई नहीं करेंगे तब तक आपको नहीं समझ में आएगा कि यह कर्म सच में किसने किए। यह संगम युग बहुत कीमती युग है और उसका समय भी बहुत लिमिटेड है और इस युग में प्राप्तियां विराट हैं तो हर कोई अपने पास जो समय है, उस समय का अवश्य ध्यान दे और हर कोई अपनी चेकिंग सदा करे। अपने किसी भी मायावी अस्तित्व को कोई भी कर्म नहीं करने देना। क्योंकि मायावी अस्तित्व ने किया हुआ कर्म का हिसाब-किताब भी बड़ा होता है। सब कुछ अंत में जरूर पता चलेगा। इसलिए आत्माएं अपना संस्कार बनाएं हर कर्म मूलस्वरूप स्थिति में करने का।

सभी को नमस्ते।

ॐ परमात्मने नमः